BA-I

Paper-II

Unit-3

Dr. Raj Gopal.
Assistant Professor (G/P.T)
Department of Philosophy.
V.S.J. College Rajnagar.
Madhubani (L.N.M.U Darbhanga)
Mail ID :- rajgopal7755@gmail.com

Topic :⇒ Descarts : Mind-Body Relation

(देकार्त : मन शरीर संबंध)

देकार्त ईश्वर के अलावा चित और अचित दो अन्य द्रव्य की सत्ता में विश्वास करते हैं। जहाँ ईश्वर निरपेक्ष द्रव्य है वहीं चीत और अचीत सापेक्ष द्रव्य है। मन (चित) का गुण विचार तथा शरीर का गुण विस्तार है। इस प्रकार से चित और अचित के क्रमशः विचार और विस्तार दो अलग-अलग गुण हैं। मन में विस्तार नहीं हो सकता तथा शरीर में विचार नहीं हो सकता है। इस प्रकार से मन तथा शरीर दोनों विरोधी तत्व हैं।

मन तथा शरीर में द्वैत स्पष्ट है। चेतना तथा जड़ दोनों विरोधी तत्व है, अतः इसमें किसी प्रकार का संबंध संभव नहीं है। परन्तु दिन प्रतिदिन के अनुभव से यह स्पष्ट होता है कि मन तथा शरीर में प्रतिदिन अन्तःक्रिया होती है। हमारे शरीर को भूख प्यास लगता है और मन उदास एवं बेचैन हो जाता है। साथ ही मन में दुःख दुःख का भाव उत्पन्न होता है तो शरीर कमजोर तथा अशान्त हो जाता है। जब हमारा मन प्रसन्न रहता है तो चेहरा भी खिला रहता है। भूख प्यास शरीर से उत्पन्न होता है परन्तु संतुष्टी मन को होता है। यहाँ विचारणीय है कि यदि मन और शरीर दोनों दो तत्व है तो अन्तःक्रिया कैसे होती है। इस स्थान पर देकार्त के दर्शन में असंगति दिखती है।

देकार्त मन और शरीर के बीच संबंध स्थापित करने के लिए 'निश्चित संयोगवाद' सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है इसे क्रिया-प्रतिक्रियावाद (Interactionism) सिद्धान्त भी कहा जाता है। इस सिद्धान्त के अनुसार आत्मा और शरीर में पीनियल ग्रन्थि (Pineal gland) के द्वारा क्रिया प्रतिक्रिया होती है। शरीर जब क्रिया करती है तो आत्मा में उसकी प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। जिसके परिणामस्वरूप आत्मा को बाह्य जगत का ज्ञान प्राप्त होता है। इसी प्रकार से आत्मा की क्रिया से शरीर में प्रतिक्रिया उत्पन्न होती है। जिसके परिणामस्वरूप शरीर में क्रिया के अनुकूल व्यवहार होने लगता है। यह प्रक्रिया निम्न चरणों में संपन्न होती है।

(i) बाह्य जगत में संवेदनाएँ उत्पन्न होती हैं। इन संवेदनाओं को इन्द्रियाँ ग्रहण करती हैं। बाह्य वस्तु से उत्पन्न संवेदनाएँ उद्दीपन का कार्य करती हैं, जिसका प्रभाव इन्द्रियों पर पड़ता है।

(ii) इन प्रभावों के परिणामस्वरूप वैद्युत शक्ति उद्दीपित होती है।

(iii) वैद्युत शक्ति के उद्दीपित होने पर उसके माध्यम से प्रभाव पीनियल ग्रन्थि तक पहुँच जाती है।

(iv) पीनियल ग्रन्थि (Pineal gland) से वैद्युत शक्ति नाड़ी तंत्र में विचरण करते हुए माँसपेशियों तक पहुँचती है। इसके बाद शारीरिक व्यापार शुरू होता है।

Scanned with CamScanner

इस प्रकार से मानसिक विचारों के अनुरूप शारीरिक कार्य होता है। तब पीनियल ग्रंथि से भौतिक शक्ति नाड़ी तंत्र द्वारा शरीर में क्रिया उत्पन्न करती है। इस प्रकार से पीनियल ग्रन्थि (Pineal gland) मन और शरीर के मिलन की शय्या है। यह ग्रन्थि मन और शरीर का मिलन बिन्दु है। इसी ग्रन्थि द्वारा मन में होने वाले क्रिया प्रतिक्रिया का प्रभाव शरीर पर पड़ता है। साथ ही शरीर की क्रिया-प्रतिक्रिया का प्रभाव मन पर पड़ता है।

देकार्त मन शरीर संबंध को एक उदाहरण द्वारा स्पष्ट करते हैं- "घोड़ा तथा घुड़सवार दोनो भिन्न है परन्तु उनमें पारस्परिक क्रिया होती है। जिस प्रकार घुड़सवार एड़ लगाकर घोड़ा की गति में वेग उत्पन्न करता है। उसी प्रकार मन भी शारीरिक क्रियाओं को उत्तेजित करता है।" यह उदाहरण केवल उपमा है व्याख्या नहीं। दोनों की प्रकृति भी भ्रमित्मूलक है। घोड़ा तथा घुड़सवार दोनों में उद्देश्य की समानता है। परन्तु मन तथा शरीर दोनों मे उद्देश्यगत समानता नहीं है। जड़ और चेतन विस्तार और विचार में किसी प्रकार की समानता दृष्टिगत नहीं है। परन्तु दोनो में अन्तःक्रिया का

अनुमान हमें प्रतिदिन होता है। देकार्त इसकी सम्यक व्याख्या नहीं कर पाते हैं।

देकार्त के मन शरीर संबंध के उपरोक्त विवेचन के आलोक में हम निष्कर्षतः कह सकते हैं कि देकार्त मन शरीर संबंध की सम्यक व्याख्या नहीं कर पाते हैं। वे मन और शरीर को दो स्वतंत्र सत्ता मानते हैं, वहीं दूसरी ओर वह दोनों में संबंध भी स्थापित करना चाहते हैं। यहाँ विरोधाभास दृष्टिगत है। इसके बावजूद देकार्त का मन शरीर संबंध आगे के दार्शनिकों के लिए एक नवीन दृष्टिकोण दिया। आधुनिक दार्शनिक राइल ने देकार्त के मन और शरीर के भेद में कोटि-दोष (Category mistake) का प्रतिपादन किया है। वह इसे मशीन में प्रेत का पूर्वाग्रह मानते हैं। इससे स्पष्ट है कि देकार्त के द्वैतवाद के आधार पर ही राइल के दर्शन का विकास हुआ है। इस प्रकार से देकार्त का यह सिद्धान्त आगे के दार्शनिकों के लिए एक सेतुकार्य का कार्य किया है। देकार्त ने सर्वप्रथम दर्शन को परम्परा के कारागार से मुक्त कर स्वतन्त्र विचारों के लिए स्वतंत्र वातावरण का निर्माण किया है।